



झारखंड की संस्कृति

अध्याय
9



झारखण्ड राज्य प्राकृतिक दृष्टि से दो मुख्य भागों में विभक्त है — छोटानागपुर और संथाल परगना। इसकी भौगोलिक स्थिति पठारी और वनस्थलीय है। यह मध्य भारत के विशाल पठार का पूर्वी भाग है। प्रकृति ने इसे भारत के अन्य प्रदेशों की अपेक्षा अलग विशेषता प्रदान की है। झारखण्ड का जनजातीय लोक जीवन नृत्य, गीत और संगीत से परिपूर्ण है। ये इनके प्राण तत्व हैं। यह भाग पहाड़ों और जंगलों से भरा है। पहाड़ों में अनेक सुंदर झरने और जलप्रपात हैं। इसका उत्तरी और पूर्वी हिस्सा कम ऊँचा है। बाकी हिस्से की ऊँचाई अधिक है। 'पारसनाथ' पहाड़ी झारखण्ड में सबसे ऊँची पहाड़ी मानी जाती है। जैन धर्म से संबंधित होने के कारण यह संपूर्ण भारत में प्रसिद्ध है। झारखण्ड की जलवायु और गंगा के मैदान की जलवायु में काफी फर्क है। झारखण्ड के भू-भाग पर सभी जातियों



के लोग निवास कर अपनी जीविका चलाते हैं। इसलिए यहाँ का रहन-सहन, वेश-भूषा और भाषाएँ भी अलग-अलग हैं।

झारखंड में बोली जाने वाली भाषाएँ

झारखंड की भाषाओं को तीन वर्गों में बाँटा गया है, जो निम्नवत है—

1. द्रविड़ भाषा परिवार
2. मुंडारी (ऑस्ट्रो एशियाटिक) या आग्नेय भाषा परिवार
3. इंडो आर्यन भाषा परिवार

द्रविड़ भाषा परिवार में कुड़ुख एवं मालतो शामिल है। उराँव जनजाति द्वारा कुड़ुख भाषा बोली जाती है। मालतो को सौरिया पहाड़िया तथा माल पहाड़िया जनजातियाँ बोलती हैं। मुंडारी भाषा परिवार में हो, खड़िया, संथाली, भूमिज, बिरजिया, असुरी, कोरबा आदि भाषाएँ शामिल है। इसका प्रयोग राँची, हजारीबाग और सिंहभूम क्षेत्रों में होता है। संथाल जनजाति के लोग संथाली भाषा में बात करते हैं। इस भाषा को 42वें संविधान संशोधन 2003 के द्वारा आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है। संथाली भाषा में बांग्ला और उड़िया का प्रभाव भी देखने को मिलता है। मुंडा जनजाति के लोग मुंडारी भाषा बोलते हैं। खूँटी, मुरहू, तमाड़, तोरपा और कोलेबिरा क्षेत्रों में मिश्रित मुंडारी भाषा का प्रचलन है। हो भाषा का विकास दूसरी भाषाओं की तुलना में कम हुआ है।

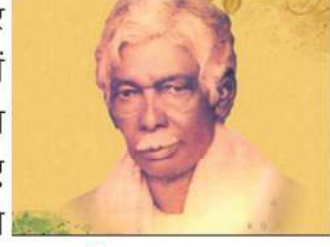
इंडो आर्यन भाषा परिवार की प्रमुख भाषाएँ नागपुरी, पंचपरगनिया, खोरठा एवं कुरमाली हैं। नागपुरी संपर्क भाषा होने के कारण पूरे झारखंड में प्रचलित है। यह नागवंशी राजाओं की राजकीय भाषा थी। पंचपरगनिया तमाड़, बुण्डू, राहे और सोनाहातू आदि क्षेत्रों में प्रचलित है। खोरठा भाषा जो मगधी प्राकृत से विकसित भाषा है, वह हजारीबाग, गिरिडीह, धनबाद, संथाल परगना क्षेत्रों में बोली जाती है। 'कुरमाली' राँची, हजारीबाग, गिरिडीह, धनबाद, सिंहभूम, संथाल परगना क्षेत्रों की प्रचलित भाषा है।

इन भाषाओं के अतिरिक्त झारखंड में मैथली, मगही, अंगिका, बांग्ला, उड़िया आदि भाषाएँ भी बोली जाती हैं।

झारखण्ड का साहित्य

झारखण्ड के क्षेत्रीय साहित्य के अंतर्गत जनजातीय भाषा के साहित्य पर्याप्त व समृद्ध रूप में मिलता है। संथाली, मुंडारी, हो, खड़िया व सादानी भाषा के साहित्य वृहत पैमाने पर लिखे गये हैं। आदिवासी साहित्य लोककथाओं, पहेलियों एवं लोकोक्तियों से भरा हुआ है।

संथालों का साहित्य काफी समृद्ध है। जिसमें सृष्टि से लेकर बाघ, गीदड़ आदि तक सभी तरह की कहानियाँ हैं। इन कहानियों में विभिन्न ऐतिहासिक संघर्षों और मनुष्य के विस्थापन की सूचना मिलती है। पंडित रघुनाथ मुरमू ने 1941 में संथाली भाषा के लिए 'ओलचिकी लिपि' का आविष्कार किया। उन्होंने इसी लिपि में अपने नाटकों की रचना की। वे एक बड़े सांस्कृतिक नेता और संथाली के सामाजिक, सांस्कृतिक एकता के प्रतीक रहे हैं।



पंडित रघुनाथ मुरमू

मुण्डारी – मुण्डारी भाषा का कथा-साहित्य भी समृद्ध है। प्रमुख कथा सोंसोबोंगा इसका एक प्रमुख बैलेड है। यह धर्मगाथा, उनके जातीय इतिहास, सृष्टि की रचना और विकास के संबंध में उनके विश्वासों पर प्रकाश डालती है। फादर हॉफमैन ने एन्साइक्लोपीडिया मुण्डारिका तैयार किया, जो मुण्डारी भाषा एवं संस्कृति का विश्वकोष है। मुण्डारी भाषा के प्रचार-प्रसार में डॉ रामदयाल मुण्डा का विशेष योगदान रहा है।

डॉ. रामदयाल मुंडा

डॉ. रामदयाल मुंडा मुण्डारी भाषा के लब्ध प्रतिष्ठित रचनाकार रहे हैं। इन्होंने मुण्डारी के अतिरिक्त पंचपरगनिया और नागपुरी में भी रचनाएँ लिखी हैं। मुण्डारी भाषा में आदि धरम, फिर भेंट और दूसर नगीत और मुण्डारी व्याकरण इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। इन्होंने कई पुस्तकों का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया। उन्हें भारत सरकार ने पद्मश्री से सम्मानित किया था।



हो – हो भाषा के अनेक शब्द संस्कृत से मिलते-जुलते हैं। हो भाषा की अपनी शब्दावली एवं उच्चारण पद्धति है। हो भाषा के प्रमुख रचनाकारों में भीमराम सोलंकी (हो काजी), नोट्राट (ग्रामर ऑफ द कोल) और लियोनल बरो (हो ग्रामर) शामिल हैं।

कुडुख – झारखंड की क्षेत्रीय भाषाओं के संदर्भ में सबसे ज्यादा लिखित साहित्य कुडुख में मिलता है। इसका लोकसाहित्य भी बहुत संपन्न है। इसके प्रमुख रचनाकार ओ. फ्लैक्स (एन इंट्रोडक्शन टू द उराँव लैंग्वेज) हैं। कुडुख भाषा के

विकास में डॉ. निर्मल मिंज का सराहनीय योगदान रहा है। साहित्य अकादमी ने उन्हें भाषा सम्मान (कुडुख) से अलंकृत किया है। इन्ने लमता उरबेनी उनकी प्रमुख रचना है।



खड़िया – इसमें लोकसाहित्य की समृद्ध परंपरा मिलती है। **डॉ. निर्मल मिंज** इसका लिखित साहित्य विकासशील अवस्था में है। खड़िया भाषा के प्रमुख रचनाकार गगनचंद्र बनर्जी (एन इंट्रोडक्शन टू द खड़िया लैंग्वेज) हैं। रोज केरकेट्टा खड़िया भाषा और हिंदी की एक प्रमुख लेखिका और शिक्षाविद हैं। इनकी कृतियों में खड़िया लोककथाओं का साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन (शोध ग्रंथ), सिंकोय सुलोओ (खड़िया कहानी संग्रह), पगहा जोरी-जोरी रे घाटो (हिंदी कहानी संग्रह) प्रमुख हैं।

झारखंड के साहित्यकार एवं उनकी रचनाएँ

भाषा	साहित्यकार	रचना
नागपुरी	पीटर शांति नवरंगी डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी गिरिधारी राम गौड़ नईमुद्दीन मिरदाहा सहनी उपेंद्रपाल नहन	नागपुरी सदानी बोली का व्याकरण नागपुरी शिष्ट साहित्य, नागपुरी भाषा पीटर शांति नवरंगी-व्यक्तित्व एवं कृतित्व मोइर पाइख अम्बा मंजर
खोरठा	श्रीनिवास पानुरी श्याम सुंदर महतो श्याम डॉ. भोगनाथ ओहदार ए.के. झा	मातृभाषा, मेघदूत, झींगा फूल मुक्तिक डहर, खोरठा वृहत्त प्रकीर्ण साहित्य, तोअ और हाम, खोरठा शब्दकोश खोरठा भाषा साहित्य का उद्भव एवं विकास खोरठा सहित सदानिक व्याकरण
पंचपरगनिया	प्रो परमानंद महतो बिपिन बिहारी करमचंद अहीर बिनोद कवि	पुसपीठा इसन होतक तो का होतक व्याकरण छोटानागपुर ताल मंजरी
कुरमाली	सृष्टिधर कटियार राजेंद्र प्रसाद महतो डॉ. मंजय प्रमाणिक	भात भगवान, मानभूमेक, घंघोरा कपिला मंगल कुरमाली साहित्य का इतिहास

विसेश्वर प्रसाद केसरी—

डॉ. बी.पी. केसरी नागपुरी भाषा के प्रसिद्ध साहित्यकार रहे हैं। इन्होंने कई पुस्तकें नागपुरी भाषा में लिखी। इनकी प्रमुख कृतियों में “नागपुरी भाषा और साहित्य”, “छोटानागपुर का इतिहास—कुछ संदर्भ, कुछ सूत्र”, “चरित्र निर्माण”, नेरुआ लोटा उर्फ सांस्कृतिक अवधारणा और “झारखंड के सदान” इत्यादि हैं।

इन्होंने झारखंडी भाषा, साहित्य और संस्कृति को एक सूत्र में पिरोने का काम किया है।

**हिंदी साहित्य**

झारखण्ड में हिंदी भाषा में रचित साहित्य समृद्ध एवं संपन्न है। यहाँ के हिंदी साहित्य को गद्य एवं पद्य में विभाजित किया जा सकता है।

गद्य साहित्य

कहानी — हिंदी भाषा के प्रथम पीढ़ी के कहानीकार बैद्यनाथ पोद्दार उर्फ बैजूबाबू को माना जाता है, जबकि राधाकृष्ण द्वितीय पीढ़ी के कहानीकार माने जाते हैं। राधाकृष्ण की पहली कहानी 1929 ई. में प्रकाशित हुई थी, जिसका नाम ‘सिन्हा साहब’ था। उनके अन्य कहानी संग्रहों में रामलीला (1946), सजला (1951), गेंद और गुलाब (1975) आदि प्रकाशित हुए हैं। अन्य कहानीकारों में द्वारिका प्रसाद, गोपालदास मुंजाल (मोलश्री) भुवनेश्वरी प्रसाद भुवन थे। शिवनंदन प्रसाद ने अल्बर्ट कृष्ण अली के नाम से अनेक कहानियाँ लिखी। उनके कहानी संग्रह हैं आदि अनादि इत्यादि, कलिक पुराण। श्रवण कुमार गोस्वामी दिनेश्वर प्रसाद, ऋता शुक्ल, रतन वर्मा, प्रहलालचंद्र दास, जयनंदन, पंकज मित्र इत्यादि झारखण्ड के हिंदी साहित्य में काफी सम्मानित नाम हैं।

उपन्यास — 1906 ई. में प्रकाशित ‘राजपुती शान’ रामचीज सिंह ‘वल्लभ’ का उपन्यास है, जिसे झारखण्ड का पहला उपन्यास माना जाता है। इन्होंने सामाजिक समस्याओं पर आधारित अधिकतर उपन्यास लिखे हैं। हवलदारी राम गुप्त हलधर का ‘कंगाल की बेंटी’ डॉ. द्वारिका प्रसाद का ‘घेरे के बाहर’ महुआ माजी का ‘मैं बोरिशाइल्ला’, रणेंद्र कुमार का

‘गायब होता देश’ इत्यादि चर्चित उपन्यास है।

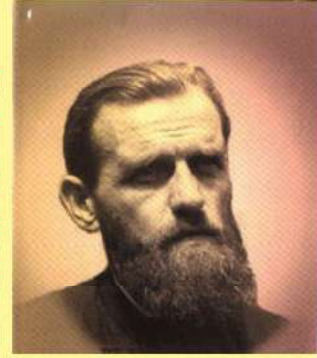
नाटक — 1913 में प्रकाशित अनंत सहाय अखौरी के नाटक ‘ग्रह का फेर’ को झारखण्ड के हिंदी साहित्य का पहला नाटक माना जाता है। आजादी के बाद के नाटककारों में राधाकृष्ण का ‘भारत छोड़ो’ 1947 में प्रकाशित हुआ। उन्होंने अधिक अन्न उपजाओं 1954 में लिखा। सिद्धनाथ कुमार का ‘सृष्टि की सांझ’ (1954) और ‘वो अभी कुंवारी है’ (1966) चर्चित नाटक है।

पद्य साहित्य

पद्य साहित्य में वैद्यनाथ पोद्दार और चिरंजी लाल शर्मा प्रारंभिक रचनाकारों में से उल्लेखनीय हैं। इनमें चिरंजी लाल शर्मा हास्य-व्यंग्य प्रधान कविताएँ लिखा करते थे, जबकि अन्य कवि पुरानी शैली की कविताएँ लिखा करते थे। वचनदेव कुमार की काव्यकृतियाँ— इहामशग, पृथ्वीपुत्री, ओ जन्मा सुनो आदि प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त बालेन्दु शेखर तिवारी, अनुज लुगुन, निर्मला पुतुल, मंजू शर्मा आदि ने भी झारखण्ड के हिंदी पद्य साहित्य को समृद्ध किया है।

डॉ. कामिल बुल्के

डॉ. कामिल बुल्के हिंदी-संस्कृत के एक महान साहित्यकार थे। मूलतः वे बेल्जियम के रहनेवाले थे। उन्हें हिंदी भाषा साहित्य के स्तंभ के रूप में जाना जाता है। बाइबल का सर्वप्रथम हिंदी में अनुवाद उन्होंने ही किया था। उनके द्वारा तैयार शब्दकोश इंग्लिश-हिंदी अत्यंत लोकप्रिय कृति है। उनकी रचनाओं में राम कथा सर्वाधिक प्रसिद्ध है। उन्हें भारत सरकार ने पद्म भूषण से अलंकृत किया।



झारखंड की चित्रकारी

प्राचीन भारत में विविध ललित कलाओं में पारस्परिक घनिष्ठ संबंध था। चित्रकला

को सभी कलाओं में श्रेष्ठ माना गया है। भारत में चित्रकला का उद्भव प्रागैतिहासिक युग में हो गया था। झारखंड में भी चित्रकारी को लोग बहुत ही मनमोहक ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

संथाल जनजाति में चित्रांकन एक लोककला के रूप में काफी प्रसिद्ध है। जादोपटिया शैली काफी प्रचलित शैली है। संथाल समाज के मिथकों पर आधारित इस लोककला में समाज के विभिन्न रीति-रिवाजों, धार्मिक विश्वासों और नैतिक मान्यताओं की प्रस्तुति की जाती है। उन चित्रों की रचना करने वाले को संथाली भाषा में जादो कहा जाता है। यह कला पहले वंशानुगत हुआ करती थी। इस शैली में सामान्यतः छोटे कपड़ों या कागज के टुकड़ों को जोड़कर बनाये जाने वाले पटों पर चित्र अंकित किये जाते हैं। प्रत्येक पट 15 से 20 फीट चौड़ा होता है। इन पर चार से सोलह चित्र तक बनाये जाते



हैं। चित्रों में मुख्यतः लाल, हरा, पीला, भूरा और काले रंगों का इस्तेमाल किया जाता है। वैसे जंगल, झरनों और पहाड़ों के बीच बसने वाले लोगों का जीवन प्रकृति के सहज सौंदर्य से प्रेरित होता है। उनका सौंदर्य बोध उनके घरों की सजावट में प्रतिबिंबित होता है। आमतौर पर साफ-सुथरे घरों की दीवारों पर चिकनी मिट्टी का लेप और मिट्टी तथा वनस्पति से प्राप्त रंगों से उकेरी जाने वाली आकर्षक आकृतियाँ इनके समाज का सहज सरल जीवन में निहित कला और सौंदर्य बोध का प्रमाण है।

फिलहाल छोटानागपुर की जनजातियों की कोहबर और सोहराय कलाएँ जिंदा

है। इनको आदिवासी संस्कृति की दीर्घ परंपरा के रूप में विकसित करने और उन्हें अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने के प्रयास भी चल रहे हैं। कोहबर कला में प्राकृतिक परिवेश और स्त्री-पुरुष संबंधों के विविध पक्षों का चित्रण होता है। वहीं सोहराय कला में जंगली जीव-जंतुओं, पक्षियों और पेड़-पौधों को उकेरा जाता है।

हजारीबाग जिले के जंगलों की गुफाओं में चट्टानों पर इस प्रकार के पाषाणकालीन शैलचित्र देखने को मिले हैं। आज भी हजारीबाग जिला एवं आसपास के क्षेत्रों में लुप्तप्राय होती बिरहोर जनजाति के घरों (कुम्बा) की दीवारों पर मिट्टी का लेप चढ़ाकर मिट्टी के रंगों से बने चित्रों में कोहबर कला की विशेषताएँ प्रतिबिंबित होती हैं। प्रत्येक विवाहित महिला अपने पति के घर कोहबर कला का चित्रण करती हैं। यह चित्रकारी घर-आँगन में विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों में फूल-पत्तियों, पेड़-पौधों और नारी प्रतीकों की अनूठी चित्रकारी के रूप में की जाती है। कोहबर का सामान्य अर्थ है- गुफा में विवाहित जोड़ा। कोह का अर्थ गुफा और बर का अर्थ विवाहित दंपति।

सोहराय भी छोटानागपुर की जनजातियों की प्राचीन चित्रकला है। यह प्रसिद्ध पर्व सोहराय से भी जुड़ी है। सोहराय पर्व दीपावली के एक दिन बाद मनाया जाता है। सोहराय चित्रकारी वर्षा ऋतु के बाद घरों की लिपाई-पुताई से शुरू होती है। कोहबर की तरह सोहराय चित्रकला भी आदिवासी औरतों में परंपरागत हुनर के कारण जिंदा है। कोहबर में देवी का विशेष चित्रण मिलता है जबकि सोहराय में कला के देवता प्रजापति या पशुपति का। पशुपति को सांड की पीठ पर खड़ा चित्रित किया जाता है। उसका शरीर डमरू की आकृति का होता है। चित्रण शैली के लिहाज से कुर्मी सोहराय और मंझू सोहराय की दो



अलग-अलग शैलियाँ हैं।

झारखंड के लोकगीत एवं नृत्य

झारखंड की जनजातियाँ नृत्य-संगीत में निपुण होती हैं। जनजातियों के लोकगीत उनके जीवन पद्धति और सांस्कृतिक धारा में प्रतिबिंब होता है। लोकगीतों में सुख-दुख और

खुशी-निराशा की झलक मिलती है। जनानी झूमर, अँगनई, बियाह, झंझाइन आदि स्त्रियों द्वारा गाया जानेवाला लोकगीत है। संथाल जनजाति में मुख्यतः बहा, सोहराई, डाहार, भिनसारी आदि लोकगीत प्रचलित है। हो, मुंडा एवं उराँव द्वारा जदुर, करमा, जतरा, जपी, लहसुआ लोकगीत गाया जाता है।

हर लोकगीत का अपना अलग राग होता है। झूमर गीत झूमर राग में गाया जाता है, जो क्षेत्रों और स्थानीय विशेषताओं के कारण अपना स्वरूप बदलते हैं। इस राग के अनेक प्रकार करमा, सोहराई और अन्य त्योहारों में समूह नृत्य के साथ गाया जाता है। छोटानागपुर के पश्चिमी भागों में अँगनई राग और पूर्वी छोटानागपुर में डइड़घरा राग प्रचलित है। झंझाइन राग संतान के जन्म या जन्म संबंधी संस्कारों के अवसर पर स्त्रियों द्वारा गाया जाता है।



यह भी जानें –

- फागुन में शिकार के गीत गाये जाते हैं, उसे जपी कहा जाता है।
- हैरो लोकगीत धान की बुआई के समय गाया जाता है।



जनजातीय लोकगीत

- झूमर गीत — पर्व त्योहार के अवसर पर
- डमकच गीत — विवाह और त्योहार के अवसर पर महिलाओं द्वारा
- अँगनाई गीत — स्त्रियों द्वारा

झारखंड के नृत्य

झारखंड में नृत्य की कई खास शैलियाँ प्रचलित हैं। पर्व-त्योहार, मेला एवं घरेलू समारोहों में नृत्य सबको आकर्षण में बाँध लेती है। झारखंड का छऊ नृत्य राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान प्राप्त कर चुका है। इस ओजपूर्ण नृत्य का जन्म झारखंड के सरायकेला-खरसावाँ में हुआ है। छऊ ओडिशा के मयूरभंज और पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले का मुख्य लोकनृत्य है। इस नृत्य में पौराणिक और ऐतिहासिक कथाओं के मंचन के लिए पात्र तरह-तरह के मुखौटे धारण करते हैं। इसमें प्रकृति और मनुष्य के बीच के संबंधों के अतिरिक्त अच्छे एवं बुरे लोगों के बीच के संघर्ष से जुड़ी गाथाओं को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। यह नृत्य वीर रस पर आधारित होता है। छऊ नृत्य की दो शैलियाँ हैं — एक सरायकेला शैली दूसरा मानभूम शैली।



जनजातीय नृत्य एवं विशेषता

जदुर – सामूहिक नृत्य शैली

पाइका – सैनिक पोशाक के साथ किया जानेवाला नृत्य

करमा – त्योहारों के अवसर पर किया जानेवाला सामूहिक नृत्य

नटुआ – पुरुष प्रधान नृत्य

पहाड़िया नृत्य

हो नृत्य

दसाय नृत्य

संथाली रिंजा नृत्य

खड़िया नृत्य



झारखण्ड के कुछ वाद्य यंत्र



करमा

झारखंड के आदिवासियों का एक महत्वपूर्ण त्योहार है। यह त्योहार भादो महीना में शुक्ल पक्ष एकादशी तिथि को मनाया जाता है। पूरे झारखंड में इसे बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। करमा में प्रकृति की पूजा की जाती है। करमा एवं धरमा नामक दो भाइयों की कथा पर आधारित इस त्योहार में करम डाल की पूजा की जाती है। इसमें पूरे 24 घंटे तक का उपवास रखा जाता है। इस त्योहार में अखड़ा में करम वृक्ष की एक डाल गाड़ कर उसकी पूजा की जाती है और रात भर सामूहिक नृत्य किया जाता है।

सरहुल

सरहुल आदिवासियों का एक प्रमुख त्योहार है। इसे फूलों का त्योहार भी कहा जाता है। जिस समय पेड़-पौधों में नये कोपलें निकलते हैं, उसी के बाद सरहुल मनाया जाता है। मान्यता यह है कि प्रकृति की पूजा किये बिना इन फूलों को नहीं तोड़ा जाए। आदिवासी जनजातियाँ प्रकृति पूजक होती हैं। सरहुल के अवसर पर घरों में नयी मिट्टी लाकर घरों की लिपाई-पुताई की जाती है। दीवारों पर तरह-तरह के चित्र बनाये जाते हैं। इसमें मुख्य रूप से घोड़ा, हाथी, मछली, फूल आदि का चित्र बनाया जाता है। सरहुल में पाहन पूजा संपन्न कराता है। सरना स्थल पर गाँव के सभी स्त्री-पुरुष एक साथ नृत्य करते हैं।



दुसू

दुसू पर्व झारखण्ड में बड़े उत्सव से मनाया जाता है। यह दुसू नामक कन्या की स्मृति में मनाया जाता है। झारखण्ड में प्रचलित किंवदन्ती के अनुसार कुंवारी लड़कियाँ भगवान कृष्ण जैसा वर पाने के लिए दुसू पर्व मनाती हैं। इस दिन तिल का विशेष पीठा बनाया जाता है। लड़कियाँ रात भर जागती हैं। कागज एवं बाँस की खपचियों से मंदिर नुमा चौटल बना कर उसमें दुसू की स्थापना की जाती है। बाद में इसका विसर्जन नदी या तालाब में किया जाता है। विसर्जन स्थल पर मेला भी लगता है।

झॉलीवुड : झारखंड का सिनेमा

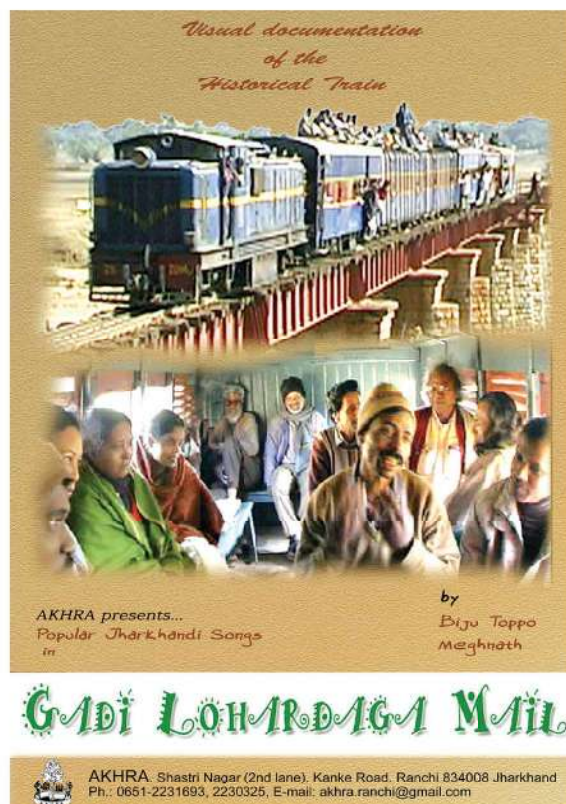
जिस प्रकार अमेरिकन फिल्म इंडस्ट्री को 'हॉलीवुड', हिंदी फिल्म इंडस्ट्री को 'बॉलीवुड' कहा जाता है, वैसे ही झारखंड फिल्म इंडस्ट्री 'झॉलीवुड' कहलाती है। 'सोना कर नागपुर' पहली नागपुरी फिल्म थी इसके बाद 1995 में रवि चौधरी ने फिल्म 'प्रीत' बनाई। प्रीत के गीतों में नया प्रयोग था। ये गीत नागपुरी संगीत के इतिहास के रुख को अपनी ओर मोड़ लिया और देखते-देखते ही ये धुनें नागपुरी संगीत की पहचान बन गईं। 1997 में डॉ. युगल किशोर मिश्र ने 'सजना अनाड़ी' बनाई, यह इतनी पसंद की गई कि इसका भोजपुरी में रीमेक भी हुआ। फिर 'गुईया नंबर वन', 'मोर प्रतिज्ञा', 'टूअर बनीं'। ये फिल्में सेल्युलाइड (रील) पर बनी थी, जो काफी महंगी होती थी। फिर 'हामर झारखंड' से डिजिटल फिल्में बनने लगीं। 'बिरसा मुंडा' 'मितवा परदेसी', 'सुन सजना', 'आवारा तोर प्यार में', 'हिली माँ', 'नागपुर कर भूत', 'झारखंड कर छैला', 'बाहा' आदि प्रमुख डिजिटल फिल्में हैं। नागपुरी-खोरठा का केंद्र जहाँ राँची रही, वहीं संथाली फिल्में जमशेदपुर में बनती हैं। हामर देहाती बाबू दय देबो जान गोरी जैसी खोरठा फिल्मों ने भी लोगों का ध्यान खींचा।

झारखंड के कई फिल्मकारों ने डॉक्यूमेंट्री फिल्मों द्वारा झारखंड की एक अलग पहचान बनाई है। सच्चिदानंद खलखो ने पर्यावरण की रक्षा (1984), सरहुल (1987), फूलो (1991) आदि फिल्मों से एक शुरुआत की। डॉक्यूमेंट्री फिल्मों में जो दो नाम सबसे चर्चित रहे, वे हैं मेघनाथ और बीजू टोप्पो। इनकी कई फिल्मों को न सिर्फ राष्ट्रीय, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सराहना मिली। राँची के श्रीप्रकाश को उनकी डॉक्यूमेंट्री फिल्म बुरुगारा (पहाड़ी नदी) के लिए नेशनल अवार्ड मिला। झारखंड की किसी भी फिल्म को पहली

बार इस अवार्ड से नवाजा गया। इससे पहले भी श्रीप्रकाश की नागपुरी फिल्म 'बाहा' को बर्लिन में आयोजित ब्लैक फिल्म फेस्टिवल में पुरस्कृत किया जा चुका है। युवा फिल्मकार निरंजन कुजूर की कुडुख भाषा में बनी फिल्म 'एड़पा काना' (2015) को भी कई अवार्ड मिल चुके हैं। पद्मश्री डॉ. रामदयाल मुण्डा पर बनी फिल्म "नाची से बांची" को भी राष्ट्रीय अवार्ड मिला है। झारखंड की यह पहली फिल्म है जिसे फिल्म डिविजन ऑफ इंडिया ने प्रोड्यूस किया है।

झारखंड फिल्म नीति – 2015

2015 ई० में झारखंड फिल्म नीति को लागू किया गया। इस नीति का मुख्य उद्देश्य झारखंड में फिल्म निर्माण को प्रोत्साहित करना, लोक कलाकारों की कला का सम्मान करना व लोक निर्माताओं को झारखंड की लोक भाषाओं में फिल्म निर्माण को बढ़ावा देना है। इसके तहत झारखंड फिल्म विकास एवं राज्य स्तरीय फिल्म परिषद की स्थापना की गई है।



जानने के लिए शब्द

हिंदी साहित्य
लोकगीतHindi Litreture
Folk Songचित्रकला
लोकनृत्यpainting
Folk Dance

अभ्यास



आइए जानें :

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

- क. झारखंड की सबसे ऊँची पहाड़ी.....है।
 ख. कुडुख और मालतो भाषा परिवार में है।
 ग. झारखंड की संपर्क भाषा..... है।
 घ. छऊ नृत्य की शुरुआत झारखंड केजिला से हुआ था।
 ङ. को फूलों का त्योहार माना जाता है।
 च. जादोपटिया की एक प्रचलित शैली है।
 छ. फादर हॉफमैन की कृति है।
 ज. डमकच गीत..... के अवसर पर गाया जाता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में लिखें।

- क. पंचपरगनिया मुख्यतः किन-किन क्षेत्रों में बोली जाती है?
 ख. जादोपटिया चित्रकला क्या है?
 ग. झारखण्ड के प्रमुख त्योहार कौन-कौन हैं?
 घ. झारखण्ड का वायलिन किस वाद्य यंत्र को कहा जाता है।

आइए चर्चा करें :



3. कोहबर चित्रकला की क्या विशेषता है?
4. झारखंड का कौन-सा नृत्य ओजपूर्ण है? इसे ओजपूर्ण क्यों माना जाता है?
5. झारखंड में करमा त्योहार किस तरह मनाया जाता है?



आइए करके देखें—

6. अपने आसपास के लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषाओं की सूची बनाइएँ?
7. नागपुरी भाषा झारखंड के किन-किन क्षेत्रों में बोली जाती है? इसकी जानकारी हासिल कर एक परियोजना कार्य तैयार कीजिए।